भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : चयनित महारत्न कम्पनियों के विशेष संदर्भ में।

शोध – प्रारूप

वाणिज्य में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत।

Forwarded

वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा।

DEAN
Faculty of Commerce
LNMU, Darbhanga

शोध निर्देशक
डा0 राजकुमार साह
एसोसिएट प्रोफेसर
वाणिज्य विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर।

शोध छात्र
विजय बहादुर पाल
रोल नं0–E2204038
PAT : 2021-2022
ग्राम–बेदी; पोस्ट–पुआरी कलॉ
जिला–वाराणसी (उ0 प्र0)
पिन कोड– 221202

परिचय :–

कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) से आशय कम्पनियों द्वारा पर्यावरण व समाज पर पड़नवाले उनके प्रभावों का विस्तृत अध्ययन करके उनके विकास के लिए सकारात्मक जिम्मेदारी उठाने से है। क्योकि बड़े कार्पोरेट घराने बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके समाज से लाभ कमा रहें हैं। जबकी संसाधनों पर समाज का अधिकार होता है। चूकि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज पर सीधा प्रभाव डालता है। इसलिए कार्पोरेट धरानों को समाज एवं पर्यावरण की स्थिरता के लिए जिम्मेदारी उठानी चाहिए और उनके सतत् विकास के लिए पर्याप्त धन का व्यय करना चाहिए।

सर्वप्रथम 1953 में हार्वर्ड और बोवेन के द्वारा अपने पुस्तक "व्यवसायियों के सामाजिक उत्तरदायित्व" में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व शब्द की चर्चा की गयी, जिसमें उन्होंने यह सवाल पूछा कि समाज के लिए क्या जिम्मेदारियां व्यवसायियों को उचित रूप से ग्रहण करन कि अपेक्षा की जा सकती है?

एक संगठन समाज का हिस्सा है और अलगाव में अपना संचालन नहीं कर सकता है। एक स्वस्थ समाज और समुदाय के साथ स्वस्थ संबंध निंरतर समृद्धि के लिए आवश्यक है। एक स्थायी व्यवसाय को अपने कर्मचारियों, हितधारकों और उस समुदाय का समर्थन और अनुमोदन होना चाहिए जिसमें वह काम करता है। निगमों की जिम्मेदारी शेयरधारकों की संपत्ति को अधिकतम करना है, लेकिन सामाजिक अपेक्षाओं के नेतृत्व में कार्पोरेट मानसिकता में परिवर्तन के करण बृहद व्यवसाय अपनी जिम्मेदारियों पर पुनर्विचार कर रहे हैं कार्पोरेट प्रदर्शन को आर्थिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव और पर्यावरणीय प्रभाव के संदर्भ में मापा जाता है। कम्पनियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह मानव और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए जीवन की गुणवत्ता सुधारने में योगदान दे।

- **कम्पनी अधिनियम 2013 के तहत कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व से सम्बंधित प्रावधान**

कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर विभिन्न दिशा–निर्देश सराकर और अन्य संगठनों द्वारा समय–समय पर जारी किए गए हैं और अंततः इसे कम्पनी अधिनियम,2013 और कम्पनी (कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व नीति) नियम, 2014 के अधिनियमन द्वारा अनिवार्य कर दिया गया है। नए कम्पनी अधिनियम, 2013 के अध्याय IX की धारा 135 में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित प्रावधान शामिल हैं, जो इस प्रकार हैं:

(I) प्रत्येक कम्पनी जिसके पास पांच सौ करोड़ रूपये या उससे अधिक का शुद्ध मूल्य, या

Raj 17.4.24 Vijay 17.04.024

(II) एक हजार करोड़ या उससे अधिक का कारोबार या

(III) तत्काल पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष के दौरान पांच करोड़ रूपये या उससे अधिक का शुद्ध लाभ हो।

(IV) वह एक कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व समिति का गठन करेगी। जिसमें तीन या अधिक निदेशक होंगे, जिनमें से कम एक निदेशक स्वतंत्र निदेशक होगा। और

(V) धारा 135 की उप–धारा (1) में संदर्भित प्रत्येक कम्पनी का बोर्ड यह सुनिश्चित करेगा। कि कम्पनी प्रत्येक वित्तीय वर्ष में अपने तत्काल पूर्ववर्तीय तीन वित्तीय वर्ष के दौरान के औसत शुद्ध लाभ का कम से कम 2 प्रतिशत व्यय कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर करें।

- **कम्पनी अधिनियम–2013 कि अनुसूची–VII :–**

कम्पनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची VII उन गतिविधियों को सूचीबद्ध करती है जो एक कम्पनी अपने कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व प्रयासों के हिस्से के रूप में संलग्न कर सकती है। अनुसूची VII के तहत अद्यतन सूची के मदों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:

1. स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पेयजल।
2. शिक्षा, कौशल विकास एंव दिव्यांग कल्याण।
3. महिला सशक्तिकरण।
4. पर्यावरण स्थिरता और पशु स्वास्थ्य।
5. राष्ट्रीय विरासत कला और संस्कृति का संरक्षण।
6. युद्ध विधवाओं और उनके आश्रितों का कल्याण्ज्ञं
7. ग्रामीण खेलों को बढ़ावा।
8. प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में योगदान।
9. प्रौद्योगिकी इनक्यूबेटर्स का विकास।
10. ग्रामीण विकास परियोजनाए।
11. मलिन बस्ती का विकास।
12. आपदा प्रबंधन।

- **महारत्न कम्पनियों से आशय :–**

महारत्न क्म्पनियाँ वे सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियां होती है जिनका
(1) लगातार तीन वर्षों में रू0 5000 हजार करोड़ से अधिक का शुद्ध लाभ कमाया हो।
(2) लगातार तीन वर्षों मे उसके औसत वार्षिक शुद्ध मूल्य रू0 15000 हजार करोड़ हो।

Ray 17.4.24   Ajay 17.04.024

(3) औसत वार्षिक कारोबार रू0 25000 करोड़ हो।

- **महारत्न कम्पनियों के नाम :–**

1. भारत हेवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड।
2. भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड।
3. कोल इंडिया लिमिटेड।
4. गेल इंडिया लिमिटेड।
5. हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड।
6. इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड।
7. नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड।
8. पावर फाइनेंस कार्पोरेशन ।
9. ऑयल एवम् नेचुरल गैस कार्पोरेशन लिमिटेड।
10. पॉवर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड।
11. रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कार्पोरेशन लिमिटेड।
12. स्टील अथॉरिटि ऑफ इंडिया लिमिटेड।
13. ऑयल इंडिया लिमिटेड

साहित्य समीक्षा :–

1. सुमन कल्याण चौधरी, प्रसन्ना कुमार साहु (2011), ने अपने अध्ययन में कहा कि वर्तमान में "कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के बारे मे जागरूकता बढ़ रही है जिसमें कम्पनियों एवं बैंको का योगदान सर्वोपरि है"।
2. स्कारिया, अनुप (2019), ने अपने शोध अध्ययन ''अनिवार्य कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और पर्यावरणीय स्थिरता पर इसका प्रभावः चयनित भारतीय कम्पनियों का एक अध्ययन'' । विषय पर शोध किये और पाये की कुछ ऐसी कम्पनियाँ हैं जो पर्यावरण क्लब की शुरुआत कर रहीं हैं जिसके माध्यम से वे पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधीत जागरुकता अभियान चला रहीं है। जिसका लोगो पर सार्थक प्रभाव भी पड़ रहा है।
3. क्रुशनावदन रामजी भाई, परमार (2020), ने अपने शोध ''भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का अभ्यासः शीर्ष 50 कम्पनियों का अध्ययन'' में बताया की शोध के लिए चयनित वर्षो में रिलायांस इन्डस्ट्रीज एवं टाटा कंसल्टेंसी कम्पनी ने सी0 एस0 आर0 मद में आवंटित धन राशि से अधिक राशि व्यय की है, जो सी0 एस0 आर0 गतिविधियों के लिए काफी लाभदायक है।
4. वुलार्ड, एस. के (2020), ने अपने अध्ययन "भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन नि0 लि0 और पर्यावरण में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व लेखांकन की भूमिका"

Raj 17/4/24 Ajay 17.04.024

में बताया कि भारतीय कम्पनियों ने अभी तक प्राकृतिक लेंखाकन से संबंधित प्रावधान नही बनाये है।

5. गुप्ता, अखिलेश (2022), ने अपने अध्ययन "भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व महारत्न कम्पनियों के संदर्भ" में बताया कि महारत्न कम्पनियों ने सी.एस.आर.के प्रावधानों के अनुरूप आवंटित धनराशि का केवल 88.42 उपयोग किया गया।
6. कुंडू, बी. (2018), ने अपने अध्ययन "भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का कम्पनियों के लाभदायकता पर प्रभाव, बदलते वैश्विक सन्दर्भ" में बताया कि कुछ कम्पनियां द्वारा सी.एस.आर. मद में की जाने वाली खर्चे स्वैच्छिक हैं इसलिए वे अपना रिर्पोट तैयार नहीं कर रही है।
7. प्रगनेश भिखाभाई, दलवाड़ी (2023), ने अपने शोध अध्ययन विषय ''भारत में चनियत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वों का एक अध्ययन'' नामक विषय पर शोध किया जिसमें उन्होंने बताया कि कुछ ऐसी महारत्न कम्पनियाँ हैं जो तुलनात्मक रुप से दूसरी कम्पनियों से अधिक सी० एस० आर० मद पर व्यय करती हैं। साथ ही साथ कुछ ऐसी कम्पनियाँ भी है जो सी० एस० आर० के किसी एक गतिविधि पर बहुत ही ज्यादा धन का व्यय करती है।

- **शोध अन्तरालः–**

शोधकर्ता द्वारा कार्पेरेट सामाजिक उत्तरदारित्व से संबंधीत साहित्व समिक्षा करने के उपरांत निम्न अंतराल को पायाः–

i. भारत में सी० एस० आर० से संबंधित अधिकतम शोध सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों एवं निजी क्षेत्र के कम्पनियों के बीच सी० एस० आर० से संबंधित तुलनात्मक अध्ययन पर आधरित है। जिसमें आवंटित राशि एवं व्यय की गई राशि सही मापदण्ड प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अलावा यह अंतराल पाया गया कि कम्पनियों के औसत शुद्ध लाभ के आधार पर सी० एस० आर० गतिविधियों पर व्यय की गई राशि के बीच उचित संबंधों का अभाव है।
ii. अधिकतम शोध कम्पनी अधीनियम, 2013 के पूर्व के वर्षो से संबंधित है। जो सी० एस० आर० का सही मापदंड प्रस्तुत नहीं करती है।
iii. कुछ शोध सार्वजनिक क्षेत्र के कम्पनियों के सी० एस० आर० गतिविधयों पर की गई है, परन्तु वे अद्यतन नहीं है।

Raj 17.4.24 Vijay 17.04.024

iv. उपर्युक्त शोध अध्ययन के अलावा शोधकर्त्ता ने पाया कि जितने भी शोध हुए हैं उन शोधों में महारत्न कम्पनियों पर कम शोध हुए हैं। इसके अलावा यह भी पाया गया कि महारत्न कम्पनियों द्वारा सी0 एस0 आर0 गतिविधियों पर आवंटित राशि का उसके सापेक्ष व्यय कि गई राशि से संबंधित बहुत ही कम शोध हुए हैं।

v. शोधकर्त्ता ने यह भी अंतराल पाया कि कम्पनियों द्वारा सी0 एस0 आर0 गतिविधियों पर व्यय कि गई कुल राशि और पर्यावरण से संबंधित मदो पर व्यय की गई राशि पर शोध का अंतराल है, तथा इस बात का भी अंतराल है सार्वजनिक क्षेत्र की सबसे लोकप्रिय सी0 एस0 आर0 गतिविधि कौन सी है ?

vi. शोधकर्त्ता ने यह भी अंतराल पाया कि कम्पनियों के सी0 एस0 आर0 गतिविधियों से संबंधित आवंटित राशि, व्यय की गयी राशि, पर्यावरण से संबंधित मदों पर व्यय की गई राशि, कम्पनियों के सी0 एस0 आर0 के पसंदीदा क्षेत्र आदि के आधार पर जो भी शोध हुये है वे पुराने संमको पर आधारित है।

उपरोक्त शोध अंतराल के आधार पर शोधकर्त्ता ने कम्पनी अधिनियम– 2013 की धारा 135 की अनुसूचि– VII को ध्यान में रखते हुए ''भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः चयनित महारत्न कमपनियों के विशेष संदर्भ में'' शोध विषय का चयन किया है। जिसके माध्यम से उपरोक्त शोध अंतराल की पूर्ति करने का प्रयास होगा।

शोध समस्या का चयन :–

कम्पनी अधिनियम– 2013 की धारा– 135 कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित प्रावधान को बताता है। इस अधिनियम के अनुसार जो भी कम्पनी सी0 एस0 आर0 के अन्तर्गत आती हैं उन्हे अपने शुद्ध लाभ का दो प्रतिशत सी0 एस0 आर0 की विभिन्न गतिविधियों पर खर्च करना पड़ता है। यह अधिनियम 01 अप्रैल 2014 से प्रभावी है। भारत विश्व का एक मात्र राष्ट्र है जहाँ पर सी0 एस0 आर0 को कानूनी मान्यता प्रदान की गई है।

शोधकर्त्ता द्वारा शोध अंतराल के उचित आधारों पर ''भारत में कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का एक विश्लेषणात्मक अध्ययनः चयनित महारत्न कम्पनियों के विशेष संदर्भ में'' विषय का चयन शोध के लिए किया गया है। जिसमें शोधकर्त्ता निम्न प्रश्नों के उत्तर को जानने का प्रयास करेगा।

Ray 17.4.24

Ajay 17.04.024

i- चयनित महारत्न कम्पनियों के औसत शुद्ध लाभ तथा इनके कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर व्यय की गयी धनराशि के मध्य क्या संबंध है?

ii- चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर आबंटित धनराशि तथा व्यय की गयी धनराशि के मध्य क्या सार्थक संबंध है?

iii- चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की गतिविधियों पर व्यय की गई कुल धनराशि तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर व्यय की गई धनराशि के मध्य क्या सार्थक अंतर है? और

iv- चयनित महारत्न कम्पनी सी0 एस0 आर0 की किन गतिविधियों को प्राथमिकता देती है और किन गतिविधियों की उपेक्षा करती है ? आदि

उपरोक्त प्रश्नों के अलावा शोध के दौरान कुछ अन्य प्रश्नों के भी उत्तर प्राप्त हो सकते है।

- **शोध अध्ययन के उद्देश्य :**

शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. चयनित महारत्न कम्पनियों के औसत शुद्ध लाभ तथा इनके कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर व्यय की गयी धनराशि के मध्य संबंधों की जाँच करना।
2. चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर आबंटित तथा व्यय की गयी धनराशि के माध्यम से मौजूदा संबंधो की जाँच करना।
3. चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट समाजिक उत्तरदायित्व की गतिविधियों पर व्यय की गई कुल धनराशि तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर व्यय की गई धनराशि के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण करना।
4. चयनित महारत्न कम्पनियों की पसंदीदा एवं उपेक्षित कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों की पहचान करना।

- **शोध अध्ययन की परिकल्पना :–**

शोध उद्देश्यों के अनुरूप कुल चार शोध परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया है, जो निम्नलिखित है :–

H_{01} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर व्यय की गयी धनराशि एवं इनके औसत शुद्ध लाभ के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

Ray 17.4.24 Ray 17.04.024

H_{A1} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर व्यय की गयी धनराशि एवं इनके औसत शुद्ध लाभ के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

H_{02} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर आवंटित तथा व्यय की गयी धनराशि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

H_{A2} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर आवंटित तथा व्यय की गयी धनराशि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

H_{03} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर व्यय की गई कुल धनराशि तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर व्यय की गई धनराशि के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

H_{A3} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर व्यय की गई कुल धनराशि तथा पर्यावरणीय स्थिरता पर व्यय कि गई धनराशि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

H_{04} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट समाजिक उत्तरदायित्व की गतिविधियों पर व्यय की धनराशि के प्रतिशत में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{A4} – चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा कार्पोरेट समाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों पर व्यय की धनराशि के प्रतिशत में कोई सार्थक अन्तर है।

अध्ययन का महत्व :

भारतीय अर्थव्यवस्था में महारत्न कम्पनियों का महत्वपूर्ण स्थान है ऐसी कम्पनियों का शुद्ध लाभ बहुत ही अधिक होता है। चूकि कम्पनी अधिनियम–2013 की धारा– 135 के अनुसार प्रत्येक कम्पनी जो सी0 एस0 आर0 के अन्तर्गत आती है उन्हें अपने शुद्ध लाभ का दो प्रतिशत सी0 एस0 आर0 गतिविधियों पर व्यय करना होता है। इसके माध्यम से कम्पनिया समाज एवं पर्यावरण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शोधकर्त्ता द्वारा चयनित शोध विषय पर प्राप्त शोध परिणाम महारत्न कम्पनियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी, इसके अधार पर वे पर्यावरण से संबंधित गतिविधियों के अलावा सी0 एस0 आर0 के अन्य गतिविधियों पर पर्याप्त ध्यान दे सकेंगी, और सी0 एस0 आर0 व्यय को और बेहतर ढंग से उपयोग कर सकेंगी।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम उन भारतीय कम्पनियों के लिए भी महत्वपूर्ण होंगी जो सामाजिक भलाई के लिए कार्य करना चाहती है। इस शोध के माध्यम से सरकार को सामावेशी एवं धारणीय विकास करने में मदद मिलेगी।

Ray 17.4.24 Vijay 17.04.024

शोध पद्धति

- **शोध प्रारूप :–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। 01 अप्रैल 2014 से कम्पनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 प्रभावी हुई है तथा इसी के आधार पर कुछ शर्तों के तहत सभी कम्पनियों के लिए कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को अनिवार्य कर दिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा किए जाने वाले कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

- **अध्ययन का क्षेत्र :**

अध्ययन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की कुछ महारत्न कम्पनियों का चयन किया गया है, जो निम्न है :–

1. ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लिमिटेड
2. नेशनल थर्मल पॉवर कार्पोरेशन लिमिटेड।
3. स्टील अथॉरिटि ऑफ इंडिया लिमिटेड।
4. कोल इंडिया लिमिटेड।

- **अध्ययन की अवधि :**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 10 वित्तीय वर्षों के समंको का प्रयोग किया जायेगा जो वित्तीय वर्ष 2014–15 से वित्तीय वर्ष 2023–24 तक की अवधि के होंगे।

- **समंको के प्रकार एवं उनका संकलन :**

प्रस्तुत शोध अध्ययन पूर्ण रूप से द्वितीयक समंको पर आधारित है

समंको का संकलन निम्न माध्यमो से प्राप्त किया जायेगा :–

(i) महारत्न कम्पनियों का वार्षिक प्रतिवेदन।
(ii) भारत सरकार के कारर्पोरेट मंत्रालय द्वारा जारी किया रिपोर्ट।
(iii) समाचार पत्रो द्वारा।
(iv) विभिन्न जर्नलों द्वारा।
(v) वेबसाइट के माध्यमो से।
(vi) भारत सरकार के सीएसआर पोर्टल के माध्यम से।

Ray 17.4.24 Ciay 17.04.024

- **सांख्यिकीय विश्लेषण :**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समंको के विश्लेषण तथा निर्वचन के लिए निम्न सांख्यिकीय मॉडल का प्रयोग किया जायेगा, जो निम्नवत हो सकता है :–

(I) माध्य, (Mean)
(II) प्रतिशत, (Percentage)
(III) सहसंबंध, (Correlation)
(IV) प्रतीपगमन, (Regression)
(V) T- परीक्षण, (T-Test)
(VI) Z- परीक्षण (Z-Test)
(VII) प्रसरण विश्लेषण, (ANOVA-Test)

शोध के दौरान कुछ सांख्यिकीय मॉडल का प्रयोग परिरिथतियों के अनुसार घटाया और बढ़ाया भी जा सकता है।

- **सार्थकता स्तर की माप एवम् सॉफ्टवेयर का प्रयोगः**

शून्य परिकल्पनाओं की पुष्टि 0.05 सार्थकता स्तर पर की जायेगी। सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग एवं विश्लेषण के लिए एमएस.एक्सल तथा सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज (एसपीएसएस) सॉफ्टवेयरों की सहायता ली जायेगी और ग्राफ एवं चार्ट का भी प्रयोग किया जायेगा।

- **अध्ययन की सीमाएँ :–**

(i) प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित हैं, अतः द्वितीयक समंकों के दोष इस अध्ययन में आ जाना स्वभाविक है।

(ii) अध्ययन के लिए समंकों का संकलन वित्तीय वर्ष 2014–2015 से 2023–2024 की अवधि तक का किया जायेगा। क्योकि इसके पूर्व भारत में सी0 एस0 आर0 अनिवार्य नहीं था।

(iii) अध्ययन के लिए केवल चार महारत्न कम्पनी (NTPC, ONGC, SAIL, COAL India Limited) का चयन किया गया।

(iv) अध्ययन अवधि में अनुसूची–VII के विभिन्न मदों पर व्यय की गयी धनराशि के समंको की अनुपलब्धता रह सकती हैं।

(v) समको के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय मॉडल एवं तकनीकों के भी अपनी सीमाऐ है जिसका दोष शोध में आ सकता है।

17.4.24 17.04.024

अध्ययन की योजनाः–

अध्याय का नाम	विषय–वस्तु
1. प्रथम अध्याय – परिचय	शोध–समस्या, शोध का उद्देश्य, शोध का महत्व, शोध–अन्तराल, कार्य–योजना एवं शोध प्रविधि।
2. द्वितीय अध्याय – साहित्य समीक्षाः	कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किया जाऐगा।
3. तृतीय अध्याय – कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा :	कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की उद्गम, विकास, सी0 एस0 आर0 का कानूनी ढ़ाचा, सी0 एस0 आर0 पिरामिड, विचारधारा आदि का अध्ययन किया जायेगा।
4. चतुर्थ अध्याय – चयनित महारत्न कम्पनियों का संक्षिप्त परिचयः	(i) भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के प्रकार। (ii) चयनित महारत्न कम्पनियों का कार्य निष्पादन। (iii) चयनित महारत्न कम्पनियों के द्वारा संपादित की जाने वाली विभिन्न सी.एस.आर गतिविधियां।
5. पंचम अध्याय– समंको का विश्लेषण एवं निर्वचनः	चययनित कम्पनियों के कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन किया जायेगा।
6. षष्टम अध्याय– निष्कर्ष एवं सुझाव	समंको के विश्लेषण एवं निर्वचन के आधार पर चयनित महारत्न कम्पनियों के कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्वों से संबंधित निष्कर्ष एवं सुझाव दिया जायेगा।

शोध के दौरान उपर्युक्त वर्णित अध्याय की योजना में आंशिक परिवर्तन हो सकता है।

Raj 17.4.24 Ajay 17.04.024

सन्दर्भ एवं ग्रंथ सूचीः–

1. सिन्हा, वी0सी0 (2015). व्यवसायिक पर्यावरण, संजय साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, 2014–15, पृष्ठ 91

2. खेरा, एस0 एस0 (1998), लोक उद्यम में प्रबंध एवं नियंत्रण, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा, 1997–98, पृष्ठ 10

3. हैनसन, ए0एच0 (1954), पब्लिक इंटरप्राइजेज एंड इकोनामिक डेवलपमेंट, रोटलेज एंड केगन पाल लिमिटेड, लन्दन, 1954, पृष्ठ 11

4. मिश्रा जगदीश नारायण : भारतीय अर्थव्यवस्था, किताब महल, इलाहाबाद, 2009 पृष्ठ 535

5. मिश्रा जगदीश नारायण : भारतीय अर्थव्यवस्था, किताब महल, इलाहाबाद, 2009 पृष्ठ 536–537

6. श्राव्यासक्सेना, ''सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों के बैंको का कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन'', WWWJMRD,Vol-02,P.P.21-23, (2016).

7. Pragenesh Bhikhabhai, dalwani, (2023), corporate social responsibility of selected public secter undertakings in India. P.91.

8. Scria Anoop (2019), mandatary corporate social responsibility and impact on environmental sustainability: A study of selected Indian compnies.P.90.

9. Krishnavadan, Ramji Bhai, Parmar (2020), corporate social responsibility pracices in India: A Study of top 50 companies. P.60.

10. Arora, Bimal & Pauranik, Ravi (2004). A review of corporate social responsibility in India, Devlovpment, Vol. 47, No. 3pp. 93-100

13. Kumar, Dr. Harish (2011). Corporate Social Responsibilty, AITBS, Publication Inida.

11. Sundar, Pushpa (2013). Business and Community: The Story of Corporate Social Responsibilty in India, Sage Publication Pvt. Limited, Inida.

17.4.24

17.04.024

वेबसाइट्स :–

- www.wikipedia.org.
- www.shodhganga.inflibnet.ac.in
- www.reseachgate.net.
- www.schalor.google.co.in

समाचार पत्र :–

- हिन्दुस्तान
- दैनिक जागरण
- अमर उजाला
- नवभारत टाईम्स
- The Hindu
- Business Standard
- The Times of India

17.4.24

17.04.024